बज्जुर है छाती किसान की

श्रीचन्द्र जैन

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-6

क्रम

1.	बज्जुर है छाती किसान की	1
2.	बरधा है किसान कौ मीत	6
3.	खाद पड़े तो होबै खेती	10
4.	बिरवा की छैयाँ	15
5.	बुंदियाँ बरसन लागीं	21
6.	राम की चिरइयाँ, रामजी कौ खेत···	28
7.	कहैं भड्डरी पानी बरसै	33
8.	घाघ कहैं बरखा सौ कोस	37
9.	मचले आज़ादी के लाने	41
10.	रहे निरोगी जो कम खाय	48
11.	ओछो मंत्री राजै नासै	52
12.	छुआछूत कौ रोग बुरौ है	56
13.	भैया, धरती का दे दान	62
14.	मानुस बड़े भाग से होवै···	67
15.	जय धरती के लाल···	73

16. घर की लछमी गाय हमारी 80
17. सरस लोक-गीत 86
18. ऊँची-ऊँची बखरी उठाओ, मोरे बाबुल ! 91
19. चरखा संग रमाई धूनी 96
20. जीमें लिखे पपीरा मोरें··· 101
21. लागे मास असाढ़ सुहावन 109
22. सब कर, हर तर 116
23. मानव ! श्रम कर, श्रम कर, श्रम कर ! 121
24. सावन आयो री मनभावन 129
25. बुन्देलखण्डी कहावतों में पंच 134
26. उठी तो बदरिया झुमकन लागी 137
27. बुन्देलखण्डी लोक-कथाएँ 141
28. ऐसी पिचकारी की घालन कहाँ सीखलई, लालन 145
29. लोकोक्तियों में बीज-चर्चा 149
30. सुन्दर दोहे 153

1

बज्जुर है छाती किसान की

जीवन के संघर्षों को साहसी बनकर सहन करने वाले किसान की छाती वज्र की बनी हुई है। उसकी सहनशक्ति अपरिमित है। उसने सब कुछ सहा, लेकिन अपनी आत्मा को न बेचा। युग-युग के शासकों ने उसे सताया, उसकी आय को छीना और उसके काँपते हुए अस्तित्व को दबाया, लेकिन वाह रे तपस्वी किसान ! तेरी साधना भगवान् शंकर के ही समान है। तूने उसे ही अपनाया, जिसने तुझे मिटाने का प्रयत्न किया। तू स्वयं भूखा रहा, लेकिन दूसरों का स्वागत तूने मोहन-भोग से किया। आज भी तू परोपकार में रत है। जेठ और बैशाख की बरसती हुई आग में तू कब चैन से बैठता है। जब मानव हतोत्साह होता है तब तू ही उसे अपने बहते हुए पसीने की बूंदों से धैर्य बँधाता है। घनघोर वर्षा में जब बिजली चमकती है और आसमान मौन हो जाता है तब तू नंगे पैरों से खेतों में फिरता है और अपनी धरती माता की सेवा में अपना सब कुछ अर्पित कर देता है। तू इसी-लिए ही तो लँगोटी बाँधता है कि जिससे संसार वस्त्रहीन न रह सके। तू इसीलिए सतुआ चाटता है कि जिससे यह दुनिया मोहन-भोग खाए। तू स्वयं झोंपडी में रहता है और दूसरों के लिए महल बनाता है। तू अपने शरीर को सुखाकर और हड्डियों को झुकाकर सदैव से संसार के अस्तित्व को बचा रहा है। धन्य है तेरी सेवा और धन्य है तेरी कामना ! तेरे त्याग और बलिदान से प्रसन्न होकर पूज्य बापू ने कहा था कि हमारे स्वतंत्र भारत का राष्ट्रपति किसान ही बनेगा। हे पृथ्वी के प्यारे पुत्र किसान ! तू अजर और अमर है। तू ही अन्नदाता है और तू ही हमारा सच्चा देवता है। तेरे पैरों में युग की शक्ति है और तेरे हाथों में विश्व की महानता छिपी हुई है। तू ही हिन्दुस्तान है और तू ही हमारे देश की आन-बान है।

किसान का व्यक्तित्व पाषाण के समान कठोर और गेहूँ की बाल के समान श्री-सम्पन्न है। वह खेत की मिट्टी में मिलकर सोना बनता है और दूसरों की ग़रीबी